स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्यविद्या संकाय के अंतर्गत विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.- हिंदी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध कार्य की रूपरेखा

शोध विषय

‘मिथिलेश्वर के कहानियों में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ’

शोधकर्ता
धनराज शिवदास बिराजदार
एम.ए.,एम.फिल.,सेट

शोध निर्देशक
डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
सहयोगी प्राध्यापक
महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

अनुसंधान केंद्र,
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

सितंबर 2022

'मिथिलेश्वर के कहानियों में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ'

भूमिका:

कहानी गद्य साहित्य की सबसे रोचक एवं लोकप्रिय विधा है। जो जीवन के विशेष पक्ष का मार्मिक, भावात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। हिंदी कहानी गद्य की वह विधा है। जिसमें लेखक किसी घटना, पात्र अथवा समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा देता है, जिसे पढकर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है। हिंदी साहित्य में विभिन्न प्रवाह पर कहानियाँ लिखी गई। जिसमें ग्रामीण जीवन हिंदी कहानी में लंबे समय से उपेक्षित था। प्रेमचंद के बाद से वह पक्ष उपेक्षित पडा था और उसकी ओर उन्मुख होना एक प्रकार से लेखक के लिए नए भाव जगत की उपलब्धि थी। इस समय ग्रामीण जीवन पर लिखे जानेवाले प्रमुख कथाकारों में मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह और फणीश्वरनाथ रेणू यह सामने आते है। इसी परंपरा में 1970-80 के दशक में मिथिलेश्वर का नाम सामने आता है।

ग्रामीण जीवन से जुडा साहित्य सामाजिक यथार्थ से अवगत है। वर्तमान समय में ग्रामीण संस्कृति में आ रहे उथल-पुथल को वे समझाते है। इसलिए उनकी रचनाओं में समाज की वास्तविकता का चित्रण मिलता है। मिथिलेश्वर ग्रामीण जीवन से जुडे कथाकार है। इसलिए उनकी कृतियों में वह परिवर्तन स्पष्ट रूप से झलकता है, जो ग्रामीण जीवन से संबंधित है। मिथिलेश्वरने ग्रामीण जीवन की समस्यायों के साथ बदलते ग्रामीण जीवन मुल्यों का भी अंकन उनकी कहानियों में व्यक्त किया है। देहात में रहनेवाले लोग प्रकृति के करीब होते है। वह एक साथ अपना जीवन बिताते है। ग्रामीण समाज का विकास विषम परिस्थितियों में होता है। कइ स्थलों पर ग्रामीण समाज अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश है। गरीबी मानव विकास में सबसे पहली और बडी बाधा है, गरीबी के कारण मनुष्य अपनी आवश्यताओं को पुरा करने में असमर्थ है। उन मुसिबतों को झेलते हुए, नित्य जीवन बिताने के लिए विवश ग्रामीणों का चित्रण मिथिलेश्वरने अपने कहानियों में किया है।

आजादी के इतने वर्षो के बाद भी ग्रामीण समाज में कोई परिवर्तन नहीं आया है। ग्रामीण लोगों को दैनिक जीवन में बहुत यातनायें सहनी पडती है। मिथिलेश्वरने अपनी कहानियों में ग्रामीण समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया है। ग्रामीण समाज में विभिन्न तरह की समस्याएँ दिखाई देती है, जैसे शिक्षा की समस्या, चिकित्सा की समस्या, असुरक्षा की भावना आदी इन समस्याओं और असुविधाओं के कारण ग्रामीण जीवन सुखमय नहीं है। गाँव में प्राथमिक समस्याओं की पुर्ति के लिए भी सुविधाएँ नहीं है। मिथिलेश्वरने अपनी कहानियों में गाँव की अभावग्रस्तता का यथार्थ चित्रण किया है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा का अनन्यसाधारण महत्व है। शिक्षा के बिना मनुष्य का विकास असंभव है।

गाँव के लोग अशिक्षित होने के कारण पिछडे हुए है। ग्रामीण समाज के विकास के लिए ग्रामीण विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन गाँव की पाठशालाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। इसका यथार्थ चित्रण मिथिलेश्वरने के 'वे जब गाँव आये' कहानी में मिलता है। उनके ही 'एक गाँव सूखाग्रस्त' कहानी में चिकित्सा की समस्या का चित्रण हुआ है।

गरीबी मनुष्य को लाचार बना देती है। आर्थिक विषमता की समस्या 'बीच रास्ते में' कहानी में आर्थिक विवंचना में जी रहे युवकों का चित्रण मिलता है। 'पुल पर' इस कहानी में शिक्षित युवक परिस्थितियों से तंग आकार चोरी-डकैती करने पर उतर आता है। इस से स्पष्ट होता है कि, मिथिलेश्वर के कहानी में लेखन की नीव ग्राम जीवन की समस्याएँ है।

साहित्यकार समाज के उस तबके को लेखन का केंद्रबिंदू बनाता है, जो उपेक्षित तथा पीडित है। समकालीन कहानियों में मिथिलेश्वरने ग्रामीण समाज की समस्याओं को सिद्दत से उठाया है। जो समाज पीछडा हुआ रहा है, उनको समझने तथा सामाजिक समता को स्थापित करने में यह अंतर्विद्याशाखीय अनुसंधान होना जरूरी है। मैंने "स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड" विद्यावाचस्पति उपाधि के पंजीकरण हेतु शोध कार्य की रूपरेखा बनायी है। मेरा शोध विषय अंतर्विद्याशाखीय हैं। ग्रामीण समाज से संबंधित कहानी साहित्य हमारे जीवन से अधिक नजदीक रहा है। ग्रामीण समाज से संबंधित साहित्य के पूर्ण

अध्ययन के लिए उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि संदर्भों का अध्ययन आवश्यक है।

समाज और साहित्यकार दोनों का निकटता का संबंध होता है। साहित्यकार की कृति का निज रूपों में विकास होता है। तथा वह जिस दिशाओं में वह साहित्य रचना करता है। वह साहित्यकार का सामाजिक परिवेश है। अंतः साहित्य का लक्ष्य साहित्य एवं ग्रामीण समाज की समस्याओं का अध्ययन करना है।

१. विषय चयन एवं शोध विषय की प्रेरणा:

ग्रामीण साहित्य की ओर आकर्षित होना बहुत बडा संयोग है। एम.ए.,एम.फिल. की पढाई करते समय सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में विभिन्न विधाओं की रचनाओं को पढा। उसी समय मिथिलेश्वर का 'बंद रास्तों के बीच' कहानी संग्रह की कहानियों को पढा। मेरा जीवन गाँव की मिट्टी से जुडा होने के कारण इस कहानी संग्रह में चित्रित समस्याएँ अपने जीवन से जुडी हुई लगी। इस से प्रभावित होकर ग्रामीण विचारधारा पर लिखे जानेवाले साहित्य पर ही हमें शोध कार्य करना होगा। ऐसे मैंने मन ही मन में ठान लिया। मिथिलेश्वर के ग्रामीण साहित्य की ओर आकर्षित होता रहा इसी से मुझे मिथिलेश्वर के ग्रामीण साहित्य पर शोध-कार्य करने की प्रेरणा मिली। मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य पर बहुत चर्चाएँ होने लगी तभी मुझे लगा की कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की समस्या पर कार्य करने की जिज्ञासा हुई। मन की इसी जिज्ञासा को शोध कार्य में परिनीत करने हेतु मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ इस विषय पर 'विद्यावाचस्पति' उपाधि के लिए कार्य करने हेतु शोध संक्षेपण तैयार किया है। यही प्रेरणा मेरे शोध कार्य की रूप रेखा को साकार कर पाई।

२. उद्देश:

१. कोई रचनाकार जब गाँव और उसके ग्रामिणों की बात कहता है तो उसे यह लिखने के लिए बाध्य करनेवाली समग्र परिस्थितियों का अध्ययन करना उद्देश है।

२. मिथिलेश्वर के व्यक्तित्व और कृतित्व की विभिन्न पहलुओं का अवलोकन करना।

३. ग्रामीण समाज और उसकी समस्याओं का अध्ययन करना।

४. मिथिलेश्वर की कहानियाँ और ग्रामीणजनों की समस्याओं का सुक्ष्म अध्ययन करना।

५. ग्रामीण समाज को समस्याओं से उभरने के लिए मिथिलेश्वर की कहानियों का अध्ययन करना।

३. परिकल्पनाएँ:

प्रस्तुत शोध कार्य में मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य का ग्रामीण जीवन की समस्याओं की दृष्टि से अध्ययन किया जाएगा। इस विषय को लेकर एक शोधकर्ता के रूप में पूर्व कल्पना इस प्रकार है -

१. ग्रामीण समाज सदियों से उपेक्षित, शोषित पीडित रहा है।

२. ग्रामीण समाज अपमानित एवं अवमानित जीवन जीता रहा है।

३. जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह समाज नगरों में दर-दर भटकता रहा है ।

४. सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक दृष्टि से यह समाज पीछडा रहा है ।

उपर्युक्त पूर्व कल्पना के आधार पर शोध कार्य संपन्न किया जाएगा।

४. शोध कार्य की व्याप्ति एवं मर्यादाएँ:

शोध प्रक्रिया एक बृहद व्यापक प्रक्रिया है। विषय की अति व्यापकता शोधकर्ता को दिगभ्रांत कर सकती है। इसलिए शोध कार्य को सही अंजाम तक पहुंचने की लिए विषय की व्याप्ति एवं मर्यादा तय करना आवश्यक हो जाता है।

मैंने भी शोध कार्य का प्रारंभ करने से पहले शोध कार्य की मर्यादाएँ एवं उसकी व्याप्ति निश्चत की है। मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण समाज की व्यथा-वेदना की अभिव्यक्ति हुई है। मेरे प्रस्तुत शोध कार्य में “मिथिलेश्वर की कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की समस्याओं का अध्ययन” किया जाएगा। प्रस्तुत कहानियों में व्यक्त ग्रामीण समाज की अंतः शोध विषय की व्याप्ति और मर्यादा तय करने से होनेवाला शोध कार्य व्यवस्थित गति से आगे बढेगा।

५. शोध विषय का महत्व:

साहित्य में समाज का प्रतिबिंब अंकित होता है। व्यक्ति से ही समाज की निर्मिती होती है। उस व्यक्ति की भावनाएँ, विचार, मूल्य, कर्तव्य, अधिकार आदि संवेदनाओं से संस्पर्षित होकर शब्द और भाषा के माध्यम से लिपि रूप में अभिव्यक्ति मिलती है, तभी साहित्य का निर्माण होता है। मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की समस्याओं का सर्वांग रूप में अभिव्यक्ति मिली है।

समकालीन कहानियों में मिथिलेश्वर ने गरीबी, बेरोजगारी, मुल्य विघटन, लोगों की बदलती मानसिकता, शहर और गाँव के लोगों की समस्या, उनके अस्तित्व के संघर्ष को उभारा है। इस संरचना को समझने और सामाजिक समता को स्थापित करने में ये शोध कार्य सहायक हो सकता है। कहानियों में चित्रित समाज को समझने के लिए उनकी समस्याओं का अध्ययन समय की माँग है। प्रस्तुत अध्ययन से ग्रामीण समाज की संरचना सामने आयेगी उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर ग्रामीण समाज में सुधार लाने के लिए यह शोध कार्य महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। ग्रामीण पिछडे हुए समाज को मुख्य धारा में लाने के लिए किन बातों की जरूरत है। उसका चिंतन शोध कार्य का महत्वपूर्ण अंग है ।

६. पूर्ववर्ती शोध कार्य:

मेरे द्वारा चयनित विशय पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है । कहानी साहित्य पर जिस विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य हुआ है, वह मेरे शोधकार्य के विषय से बिलकुल भिन्न है। मेरे शोधकार्य से पूर्व कहानी-उपन्यास साहित्य पर जिन विषयों को लेकर शोधकार्य किया है, वह शोधकार्य निम्न है।

अ. मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतनाः एक मूल्यांकन

शोधछात्र - श्रीमती शशिबाला सिंह

एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय चर्चगेट,

मुंबई ४०००२०

शोध निर्देशिका- डॉ. श्रीमती सुनीता साखरे

हिंदी विभाग

एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय चर्चगेट,

मुंबई ४०००२०

जिसके द्वारा यह निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोधकार्य का विषय मौलिक है।

७. शोध की रूपरेखा:

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''मिथिलेश्वर के कहानियों में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ'' सुविधा की दृष्टि से पाँच अध्यायों मे विभाजित किया गया है। अंत में उपसंहार है। इसका संक्षिप्त विवेचन निम्न लिखित है।

प्रथम अध्याय

मिथिलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अवलोकन

प्रस्तुत अध्याय में व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रभावित करनेवाले पारिवारिक, सामाजिक परिस्थितियों का अवलोकन किया जाएगा। व्यक्तित्व के पहलुओ में मिथिलेश्वर का जीवन परिचय, जन्म, माता-पिता एवं परिवार शिक्षा, विवाह, रचनाकर्म का प्रारंभ, रहन सहन और स्वभाव संपादन सम्मान पुरस्कार, उपलब्धियाँ, उपन्यास, कहानी, अनुवादित साहित्य कृतियाँ। आदि बिंदुओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय

ग्रामीण समाज की समस्याओं का अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में ग्राम की संकल्पना तथा ग्रामीण समाज की संरचना का बुनियादी अध्ययन कर ग्रामीण समाज की समस्याओं का सैध्दांतिक अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय

मिथिलेश्वर के कहानियों में धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय में मिथिलेश्वर के कहानियों में चित्रित धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्या का चित्रण हुआ है जिसमें देवी देवता, अंधश्रद्धा, उत्सव आदि समस्याओं का चित्रण किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय

मिथिलेश्वर के कहानियों में सामाजिक तथा शैक्षिक समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय में मिथिलेश्वर के कहानियों में विविध सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है जिसमें स्त्री जीवन की समस्या, नारी चेतना, नारी शोषण, दहेज प्रथा, विधवा समस्या, पारिवारिक समस्या, सामाजिक कुप्रथाएँ, कृषक जीवन आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

पंचम अध्याय

मिथिलेश्वर के कहानियों में राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याएँ

इस अध्याय में, मिथिलेश्वर के कहानियों में अलग-अलग राजनीतिक समस्या चित्रित हुई है। जिसमें मोहभंग, पंचायत व्यवस्था, पुलिस का अत्याचार, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी आदि विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

षष्टम अध्याय

उपसंहार

शोध प्रबंध लेखन की समाप्ति के बाद प्रबंध का सार और शोध कार्य की उपलब्धियाँ प्रस्तुत की जाएगी।

८. शोध प्रविधि:

उपर्युक्त शोध कार्य निम्न शोध प्रणाली के आधार पर किया जाएगा।

क. विश्लेषणात्मक पद्धति, निरीक्षण पद्धति

ख. वर्णणात्मक पद्धति के अंतर्गत सर्वेक्षण, साक्षात्कार एवं प्रश्नावली पद्धति आदि का उपयोग शोध कार्य में किया जाएगा।

शोध प्रबंध का कार्य विभाजन; (work Distribution)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य हेतु समय सारणी:

सामग्री संकलन	अगस्त २०२१ से फरवरी २०२२
प्रथम अध्याय और द्वितीय अध्याय	फरवरी २०२२ से अगस्त २०२२
तृत्तीय और चतुर्थ अध्याय	अगस्त २०२२ से अगस्त २०२३
पंचम अध्याय और उपसंहार	फरवरी २०२३ से अगस्त २०२४

टिप्पणी - अध्याय एवं प्रविधि में परिवर्तन की संभावनाएँ होगी।

परिशिष्ट

९. आधार ग्रंथ

१. बाबुजी – मिथिलेश्वर– नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली १९७६

२. बंद रास्तों के बीच - मिथिलेश्वर- नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली १९७८

३. दुसरा महाभारत - मिथिलेश्वर – नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली १९७९

४. मेघना का निर्णय - मिथिलेश्वर – नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली १९८०

५. तिरीया का जन्म - मिथिलेश्वर- सरस्वती प्रकाशन दिल्ली १९९३

६. हरिहर काका और अन्य कहानियाँ - मिथिलेश्वर- राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली १९८३

७. छह महिलाएँ - मिथिलेश्वर – १९८४

८. माटी की महेक धरती गाँव की - मिथिलेष्वर -१९८६

९. एक में अनेक - मिथिलेश्वर- राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली १९८७

१०. एक थे प्रोफेसर बिलाल - मिथिलेश्वर- १९९३

११. भोर होने से पहले - मिथिलेश्वर - भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली १९९४
१२. चल खुसरो घर अपने - मिथिलेश्वर- भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली २०००
१३. जमुनी - मिथिलेश्व - राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली २००१
१४. एक और मृत्युंजय - मिथिलेश्वर - लोकभारती प्रकाशन दिल्ली २०१४
१५. हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ - डॉ. ज्ञान अस्थाना
१६. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र
१७. ग्रामीणता - साहित्य आणि वास्तव, आनंद यादव, मेहता पब्लिशिंग हाउस,१९८१
१८. ग्रामीण साहित्य स्वरूप् आणि समस्या, आनंद यादव, मेहता पब्लिशिंग हाउस, मुंबई
१९. ग्रामीण साहित्य चळवळ आणि आम्ही, संपादक वासुदेव मुलाटे
२०. ग्रामीण साहित्य चिंतन आणि चर्चा, वासुदेव मुलाटे, २००५
२१. ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि शोध, नागनाथ कोत्तापल्ले, १९७५

शोध निर्देशक	शोधकर्ता
गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे	धनराज शिवदास बिराजदार